Sanskrit (Hons)
B.A (Ist Paper)

Date - 17/8/2020

डॉ. लक्ष्मिधर मालवीय
अतिथि विद्वान
विभाग - संस्कृत
आर. डी. एन. कॉलेज,
मंसौर, केरल राज्य

मेघदूतम् (पूर्वमेघ)

पूर्व वर्णित श्लोक का भावार्थ यह है.

उस निर्विन्ध्या नदी की क्षीण जलधारा शीतकाल के कारण वेणी (स्त्रियों की केश की चोटी) जैसी बनी हुई है और वह किनारे पर उगे हुए वृक्षों से गिरने वाले पुराने पत्तों से पीली पड़ गई है, अतएव हे भगवान मेघ! अपनी विरहावस्था द्वारा तुम परदेशी के सौभाग्य को बतलाती हुई वह निर्विन्ध्या जिस उपाय से अपनी दुर्बलता दूर कर ले, तुम वह उपाय अवश्य करना।

यह श्लोक प्रकृति के मानवीकरण का अनुपम उदाहरण है। प्रकृति के मानवीकरण करने में महाकवि कालिदास के समतुल्य कोई नहीं ठहरता। इस श्लोक में एक सामान्य पर्यावरणीय एवं भौगोलिक परिवर्तन को महाकवि ने जिस लावण्य एवं रमणीयता से प्रस्तुत किया है, वह अद्भुत है। इससे पूर्व के श्लोक में 'दर्शितावर्तनाभैः'

के रूप में महाकवि ने संभोग शृंगार का जाल बिछाया है जिसमें स्वयं पाठक फँस भी गया है परन्तु सत्य: यह विप्रलम्भ शृंगार का ऐसा मार्मिक चित्रण किया है कि पाठक सोच नहीं पा रहा है कि वह निर्विन्ध्या नायिका के 'आवर्त नाभि' का दर्शन करे या अपने प्रियतम के वियोग में कृशकाय नायिका के मलिनमुख को देखे। लेकिन यही उत्कर्ष तो महाकवि कालिदास की विशेषता है

महाकवि ने इसमें स्त्री एवं पुरुष के मध्य उपजने वाले नैसर्गिक प्रेम का सफल चित्रण किया है उनके अनुसार वे पुरुष बहुत सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें किसी स्त्री का सच्चा प्रेम मिलता है एवं जिनके परदेश जाने पर वियोग में कोई स्त्री अपनी देहयष्टि दुबली करती हो एवं जिसका मुख पीला पड़ जाए। पुरुष को चाहिए कि वह उस सच्चे प्रेम की कद्र करे, नहीं तो उसे इहलोक एवं परलोक में कभी सुख नहीं मिलता। जो पुरुष अन्य स्त्रियों के फेरे में अपने सच्चे प्रेम को नहीं समझता, वह दुर्भाग्यशाली है। अतः यक्ष के माध्यम से कवि कहता है कि जिस विधि से 'निर्विन्ध्या' नदी अपनी कृशकायता दूर करे, वही उपाय करो।

Rulam Ranjan
12/8/22

- समाप्त -